2) 6 मार्क्स में व्याख्या बढ़ाये
2) 15 marker चाहि UPSC करे

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

आपकी सफलता का प्रवेश द्वार....

AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED INSTITUTE

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान

सामान्य अध्ययन / GENERAL STUDIES

85/300

निर्धारित समय: 3 hour
Time Allowed :

अधिकतम् अंक 300
Maximum Marks

नाम. Name : Ku. Akanksha Garhwal

मोबाईल नं. Mobile No : 7703837099

ई–मेल पता. E-mail Address akankshagarhwal44@gmail.com

रोल नं. Roll No :

दिनांक (Date) 9/01/2021

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam) हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature) Akanksha

प्रश्न – पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़े :

- इसमें 3 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश–पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
- प्रश्नों में शब्द सामा, जहा विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
- उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रुप से काटा जाना चाहिए।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

- There are 3 question and all the questions are compulsory.
- The Number of marks carried by a question/part is indicated against it.
- Answer must be written in the medium authorized in the admission certificate which must be started clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) booklet in the space provide. No marks will be given for answer written in a medium other than the authorized one.
- Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the answer book must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained) ________ टिप्पणी (Remarks) ________

प्रश्न संख्या

1 A

तापीय प्रतिलोमन से तात्पर्य, जब ऊँचाई से वृद्धि के साथ तापमान में कमी के स्थान पर वृद्धि हो।
यह सामान्यतः जलवायु परिवर्तन का प्रभाव है।

B

जब किसी क्षेत्र विशेष में कृषि के अलावा पशुपालन, चारागाह जैसी क्रियाएं भी संचालित हो, मिश्रित कृषि कहते हैं
- लाभ: उत्पादन वृद्धि, उर्वरता वृद्धि, किसान आय वृद्धि

C

आपदा प्रबंधन से संबंधित शब्दावली है।
आपदा पश्चात उठाये जाने वाले कदम हैं जिसमें स्वास्थ्य, खाद्य संबंधी एवं आपदा पूर्व स्थिति लाने का प्रयास किया जाता है।

D

E

जेट स्ट्रीम पवने क्षोभमण्डल से समताप मंडल में प्रवाहित
सामान्यतः दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर
प्रकार: उपोष्ण कटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम आदि।

F

रिल अपरदन की अंतिम अवस्था है
वर्षाजल तेज बहाव से नालियां चौड़ी एवं गहरी हो जाती है
- कृषि योग्य भूमि नहीं रहती है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तरपुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

G यह एक प्राकृतिक संरचना है

H एल्बिडो से तात्पर्य - पृथ्वी तक पहुंचने वाले तापमान की कुछ मात्रा वातावरण में परिवर्तित कर देना।

I चम्बल नदी पर अवस्थित बाँध है
प्रमुख जिले - मंदसौर, नीमच आदि
म०प्र० में सिंचाई व जल प्रबंधन हेतु अति आवश्यक।

J

K भ्रंश घाटियों के बीच स्थित पर्वत भ्रंशोत्थ पर्वत कहलाते हैं जो अपेक्षाकृत ऊँचे होते हैं
उदा० - विन्ध्याचल पर्वत

L ज्वारनमुख के अन्तर्गत नदियां डेल्टा का निर्माण नहीं करती हैं। प्रमुख नदियां - नर्मदा, ताप्ती आदि।

2

M हिमालय पर्वत निर्माण से पूर्व संरचना है जिसके समकालीन पतन पश्चात हिमालय की उत्पत्ति हुई मानी जाती है।

N यह निम्न वायुदाब का क्षेत्र है जिसके स्थानांतरण एवं विचलन से मौसमी परिवर्तन देखे जाते हैं।

O क्षेत्र विशेष में फसल उत्पादन हेतु निश्चित काल में कृषि की जाती है ताकि शीघ्र ही उत्पादन किया जा सके।

2 A

भारत कोयला भण्डार की दृष्टि से एक विशाल राष्ट्र है जो विश्व में उत्पादन की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है। भारत में कोयला उत्पादित राज्य मुख्यतः छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल है।

- छत्तीसगढ़ – कोरबा खदानें, दुर्ग, बैलाडीला
- उड़ीसा – बस्तर क्षेत्र

पूर्वी पठार का छोटा नागपुर का पठार –

- झारखण्ड – सिंहभूम जिला
- कर्नाटक – शिमोगा आदि प्रमुख कोयला उत्पादित क्षेत्र हैं इन संचित कोयले को विद्युत, उद्योग में उपयोग किया जाता है।

MAP छोड़ें

शब्द सीमा दर्शाएं

(2)

B

पेट्रोलियम एक क्षय संसाधनों के अन्तर्गत अनवीकरणीय ऊर्जा का संसाधन है। भारत में पेट्रोलियम के भण्डार सीमित अवस्था में उपलब्ध है।

- असम का डिगबोई क्षेत्र प्रमुख पेट्रोलियम क्षेत्र है
- मुम्बई का बाम्बे हाई

इसके अलावा पूर्वी भारत एवं दक्षिण पूर्वी भारत में भी पेट्रोलियम संचय के क्षेत्र मौजूद हैं जहां खनन कार्य जारी रहता है।

- भारत प्रमुख पेट्रोलियम निर्यात देशों जैसे - अमेरिका इजराइल आदि से पेट्रोल का आयात करता है।

← व्याख्या बढ़ाएं

(2)

C

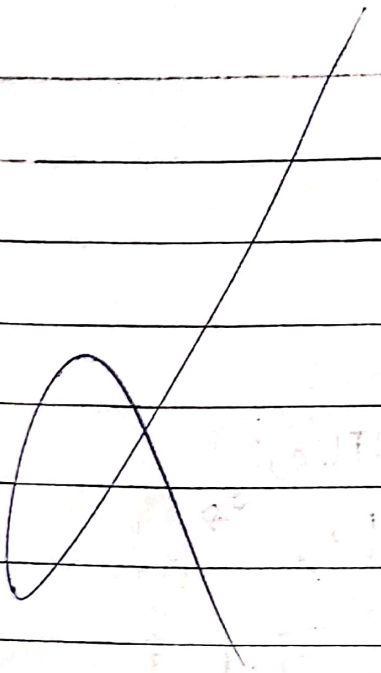

D ज्वालामुखी एक स्थलीय आकृति / संरचना है जो तप्त मैग्मा या लावा के अंतः परतों से बाहर प्रस्फुटन के बाद निर्मित होता है। ज्वालामुखी द्वारा कई स्थलाकृतियों का निर्माण होता है जिनके अन्तर्गत – लैपोलिथ, लैकोलिथ,

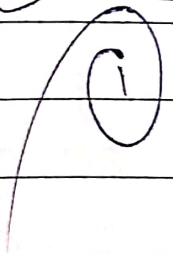

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

E

मृदा एक अहम प्राकृतिक संसाधन है जो वन, कृषि विस्तार एवं वृद्धि हेतु सहायक है। इस अपरदन, निम्नीकरण, क्षरण जैसी समस्याएं सामने आती हैं अतः इस का संरक्षण अति आवश्यक है।

संरक्षण व संवर्धन के उपाय : • वृक्षारोपण करना।

- कृषि की विभिन्न पद्धतियां – कण्टूर फार्मिंग, भू-वेदिकरण
- जैविक खाद प्रयोग एवं रसायन उर्वरक सीमित प्रयोग
- अस्थायी कृषि पर नियंत्रण जैसे – स्थानांतरित कृषि
- अनियंत्रित पशुचारण पर रोक।
- खेतों के आसपास मेड़ों का निर्माण करना
- शून्य बजट खेती को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्षतः समुदाय आधारित सहयोग अपनाना।

F

उद्योगों के संचालन एवं प्रक्रिया के दौरान कई प्रकार की गतिविधियां संचालित होती रहती हैं। इसमें उनकी अग्रवर्ती एवं पूर्ववर्ती आवश्यकताएं होती हैं जो निम्न हैं :

1) पूर्ववर्ती आवश्यकता : • कच्चे माल का समुचित प्राप्ति

- उपकरणों संबंधी आवश्यकताएं
- श्रमिक प्रशिक्षण व अन्य।

2) अग्रवर्ती आवश्यकता : • निर्मित उत्पाद की समुचित पैकेजिंग व मानकीकरण।

- परिवहन व्यवस्था सुगम ताकि उत्पाद नुकसान न हो।

निष्कर्षतः सरकारी नीतियों व आधुनिक प्रयासों से उद्योगों की तमाम आवश्यकताएं पूरी हो सकती हैं

6 कृषि, पौधो, पशु संबंधी कच्चे माल की विभिन्न उद्योगों से उत्पाद निर्मित कर उपभोक्ताओं तक पहुंचे सुनिश्चित करना ही खाद्य प्रसंस्करण है।
• भारत में यह उद्योग पांचवा सबसे बड़ा उद्योग है जो 13 मिलियन लोगो को प्रत्यक्ष एवं 35 मिलियन लोगों को अप्रत्यक्ष तौर पर रोजगार उपलब्ध कराता है।
उपयोगिताः • दूध, दही, मत्स्य जैसे उत्पाद उत्तरजीविता
• महिला सशक्तिकरण में सहयोगी
• निर्यात का 14%, एवं जीडीपी में 12% का योगदान
• कृषकों की आय में वृद्धि में सहायक
• ग्रामीण रोजगार वृद्धि एवं कुपोषण में कमी।
निष्कर्षतः सम्पदा योजना, मेगा फूड पार्क जैसे प्रयास

7 भारत में लगभग 60 से 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। ऐसी स्थिति में कृषि को आय का अहम साधन एवं सफल बनाने हेतु प्रयास किये जाने चाहिए। परन्तु कुछ समस्याएं व्याप्त हैं जो निम्न है:
1) कृषि योग्य सिंचित क्षेत्र की कमी।
2) कृषकों के पास आधुनिक संयंत्रो का अभाव।
3) मानसून अनिश्चितता एवं जलवायु परिवर्तन।
4) मृदा की सही पहचान न होने से उत्पादन में कमी।
5) मध्यस्थ, बिचौलियों से कृषक शोषण
6) सिंचाई की उत्तम प्रणालियों का अभाव व जागरूकता।
निष्कर्षतः कृषि को सफल बनाने हेतु इसे आधुनिक एवं उत्पादित कृषि बनाए जाने की जरूरत है।

I लौह इस्पात उद्योग भारत का एक अहम मशीनीकृत उद्योग है। भारत लौह अयस्क खनन एवं उत्पादन में विश्व में अहम राष्ट्र है। जहाँ मध्यप्रदेश के पूर्वी क्षेत्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमबंगाल आदि राज्य लौह अयस्क खनन राज्य है।

(1)

J पृथ्वी की आंतरिक संरचना को समझने एवं जानने का कोई सीधा मार्ग नही है अपितु घनत्व, तापमान आदि माध्यमों से आंतरिक संरचना की जानकारी शामिल होती है इसके अन्तर्गत – क्रोड, क्रस्ट एवं ऊपरी सतह शामिल है। क्रोड एक तरल मैग्मा युक्त स्थान है जहां से मैग्मा ऊपरी सतहों की ओर आता है।

(2)

प्रश्न संख्या 8

कृषि को सफल बनाने हेतु सिंचाई एक अहम कारक है। भारत के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई के माध्यम से खेती की जाती है व उनमें कई कुशल सिंचाई प्रणाली को अपनाया जाता है;

1) फव्वारा सिंचाई: खेतो में पाइपों के छेदों से फव्वारे के माध्यम से सिंचाई।

2) टपकन सिंचाई: नियंत्रित तरीके से पाइपों से एक-एक बूंद से सिंचाई परन्तु लवणता एकत्रीकरण, पाइप कटाव जैसे कारण।

3) उप-सतही सिंचाई - सतह के नीचे पाइपों के माध्यम से सिंचाई, मृदा में नमी बनी रहती है।

4) चक्रीय सिंचाई: खेतों में चक्रीय पंपों के माध्यम से, पानी दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच सुनिश्चित।

प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र भारत का सबसे प्राचीनतम क्षेत्र है जो विन्ध्याचल श्रेणी के कारण उत्तर के विशाल मैदान से विभाजित होता है।

यह क्षेत्र विभिन्न भू-आकृतिक क्षेत्रों में विभाजित है:

प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र
- मध्य भारत का पठार
- पूर्वी भारत का पठार
- दक्कन का पठार
- काठियावाड़ का पठार

• मध्य भारत का पठार : प्रायद्वीपीय पठार का यह क्षेत्र अनेक उच्चावच व भू-आकृतियों से युक्त है। इसके अन्तर्गत
- मेवाड़ का पठार
- मालवा का पठार
- सतपुड़ा मैकाल श्रेणी
- बुन्देलखण्ड का पठार

मेवाड़ का पठार मुख्यतः राजस्थान, गुजरात में विस्तारित है जो विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी को मालवा पठार से विभाजित करती है। वहीं मालवा का पठार बेसाल्ट चट्टान से निर्मित संरचना है जहां मुख्यतः काली मिट्टी का विकास हुआ है। जिससे कपास उत्पादन में अग्रणी क्षेत्र है।

मालवा के पठार की जलवायु सम है व मुख्यतः गेहूं, ज्वार जैसी फसलों का उत्पादन होता है। मुख्य औद्यो॰ मध्यप्रदेश में इन्दौर, नागदा, झाबुआ आदि।

क्षेत्र है। ~~सतपुड़ा~~

सतपुड़ा मैकाल श्रेणी एक प्रमुख वन संपदा युक्त क्षेत्र है जहाँ सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ - महादेव पर्वत में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी में उपस्थित है। बुन्देलखण्ड का पठार ग्रेनाइट व नीस चट्टान से निर्मित स्थलाकृति है जहाँ लाल-पीली मिट्टी का विकास हुआ है। इस प्रकार कि पूर्व में छोटा नागपुर का पठार अवस्थित है।

पूर्वी भारत का पठार : खनिज संसाधन संपन्न एवं जैवविविधता से युक्त इस पठार को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है -

- छत्तीसगढ़ बेसिन (बघेलखण्ड का पठार)
- छोटानागपुर का पठार
- मेघालय का पठार

- बघेलखण्ड का पठार मुख्यतः छत्तीसगढ़, पूर्वी म.प्र. व उड़ीसा में विस्तारित है यह खनिज संसाधन संपन्न क्षेत्र है।

छोटानागपुर का पठार छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड पश्चिम बंगाल, में विस्तारित है। इस पठार की सबसे बड़ी नदी दामोदर है जो इस पठार से प्रवाहित होकर पश्चिम बंगाल से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अलावा स्वर्णरेखा नदी के अपवाह क्षेत्र का संबंध भी इसी पठार से है।

इस प्रकार को राँची का पठार, हजारीबाग का पठार भी कहते हैं। यहां खनिज प्रचुर मात्रा में है एवं खनिज संसाधन संपन्न क्षेत्र होने के बावजूद उद्योगों का विकास नहीं हुआ है एवं यह एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र है।

मेघालय का पठार मुख्यतः गारो, खासी एवं जयंतिया पहाड़ियों से युक्त है जहां खासी पहाड़ी में चेरापूंजी स्थान पर मासिनराम सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है।

दक्कन का पठार:

- दक्कन ट्रैप
- आंध्र का पठार
- कर्नाटक का पठार
- दण्डकारण्य का पठार

दक्कन ट्रैप ↓ मुख्यतः महाराष्ट्र में अवस्थित है जहां सतमाला, अजन्ता, बालाघाट एवं हरिश्चन्द्र श्रेणियां अवस्थित हैं। हरिश्चन्द्र की सबसे ऊँची चोटी कलसुबाई है।

• कर्नाटक का पठार मुख्यतः मलनाड व निम्न मैदान में विभाजित है जहां बाबाबुदान सबसे ऊँची चोटी है।

• दण्डकारण्य का पठार - मुख्यतः उड़ीसा, झारखण्ड में विस्तारित है। इन्द्रावती नदी के अपवाह क्षेत्र का सीमांकन इसी पठार से है। टिन, तांबा, लौह अयस्क संबंधित धातु यहां पाई जाती हैं परन्तु यह एक सूखा ग्रस्त क्षेत्र है जहां कृषि संबंधित क्रियाएं सीमित हैं।

निष्कर्ष: प्रायद्वीपीय पठार खनिज, जलविद्युत, उद्योगों की दृष्टि से संपन्न क्षेत्र है।

7

प्रश्न संख्या
D

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला सातवां राष्ट्र है जहां लगभग 130 मिलियन जनसंख्या निवासरत है। ऐसे में बढ़ती जनसंख्या भारत के संसाधनों पर अत्यधिक दबाव बनाने के साथ ही कई समस्याओं का भी एक प्रमुख कारक है।

भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण हेतु कई प्रयास किये जाते रहे हैं एवं किए जा रहे हैं ऐसे स्थिरीकरण मानकों ने जनसंख्या में अस्थायी स्थिरीकरण एवं असमानता को पैदा किया है। इन्हे निम्न बिन्दुओं के तहत समझा जा सकता है:

1) भारत की प्रजनन दर को 2.1 के स्तर पर लाना इससे प्रति दंपति केवल 2 बच्चों से जनसंख्या एवं पारिवारिक दबाव कम होगा।

2) जनसंख्या नियंत्रण नीति के तहत दो से अधिक बच्चों वाले दंपत्ति को शासकीय सेवा का लाभ न देना।

3) गर्भपात को शासकीय / कानूनी मंजूरी से अनचाही संतान व जनसंख्या नियंत्रण में सहायता मिलेगी।

इसी प्रक्रिया में बढ़ती जनसंख्या को रोकने हेतु सरकार द्वारा भी कई प्रयास एवं नीतियों का क्रियान्वयन किया जा रहा है:

1) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में निम्नलिखित
- प्रजनन दर 2.1 तक लेकर आना।
- पंचायत, ग्राम सभा के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता में वृद्धि करना।
- शिशु मृत्यु दर में कमी करना
- नवजात शिशु मृत्यु दर में कमी करना।
- स्वास्थ्य सुविधा विस्तार एवं प्रजनन सुविधा में विस्तार के साथ जनसंख्या संतुलन का प्रयास करना।

इस राष्ट्रीय नीति के अलावा मध्यप्रदेश में भी जनसंख्या नियंत्रण नीति 2001 का अनुसरण किया जा रहा है।

(3)

1 A

विशाल मैदानों में जलोढ़ मृदा से निर्मित भूमि को सम्प्राय मैदान कहा जाता है।
- यह कृषि हेतु उपयुक्त एवं उपजाऊ होते हैं।

B

उत्तर भारत में ग्रीष्म ऋतु के समय चलने वाली उष्ण पवनों को लू कहा जाता है। तापमान 47°C
यह मुख्यतः उत्तर एवं उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में प्रवाहित होती है - जैसे - दिल्ली, राजस्थान आदि।

1/2

C

काल्डेरा एक ज्वालामुखी से निर्मित स्थलाकृति है

1/2

D

समुद्री क्षेत्र में प्रवाल भित्तियों के कारण अथवा उनके रंग परिवर्तन को विरंजन कहा जाता है
कारण: जलवायु परिवर्तन, समुद्री प्रदूषण आदि।

1/2

E

रिफ्ट घाटी एवं विशाल क्षेत्रीय पर्वत व पठारों के मध्य स्थित संकरा क्षेत्र है।

F

प्रशांत महासागर का अग्नि वलय - स्ट्रॉम्बोली ज्वालामुखी को कहा जाता है जो एक एक प्रसुप्त ज्वालामुखी है।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी
मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्राकृतिक संसाधन उपयोग एवं इसका संरक्षण ही धारणीय प्रबंधन है।
- यह सतत विकास लक्ष्यों का अहम घटक है।

मृदा अपरदन, निम्नीकरण एवं क्षरण की समस्या से ग्रसित मृदा ही समस्याग्रस्त मृदा है।
जैसे – चम्बल घाटी मृदा, नर्मदा घाटी मृदा, हिमालय क्षेत्रीय मृदा आदि।

1986 में यूक्रेन शहर में मानवीय वैज्ञानिक अनुप्रयोग के दौरान घटित परमाणु त्रासदी है।
- लगभग 1.5 लाख लोग प्रभावित हुए एवं हजारों में मृत्यु
- प्रमुख कारण – मानव लापरवाही

ऐसी सिंचाई प्रणाली जो सीमित जल प्रयोग के साथ अधिकतम कृषि उत्पादन एवं मृदा संतुलन में सहायक हो।
उदा – फव्वारा सिंचाई प्रणाली, ड्रिप्कन, उपसतही आदि।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

M — सागरीय / लवणीय जलों से युक्त गृत वाली क्षेत्र

N — महासागर के द्वारा प्रवाहित व बहाव से तट के पास एकत्र किया गया निक्षेप है जिसमें लवणीय मृदा एवं महासागरीय अपरदित अवशेष शामिल हैं।

O

P — सरक्रीक - भारत पाकिस्तान के मध्य अवस्थित एक विवादित क्षेत्र है जहां सदैव सैन्य उपस्थिति रहती है। यह क्षेत्र हिमालयी पूर्वी क्षेत्र में स्थित है

Q

2 C

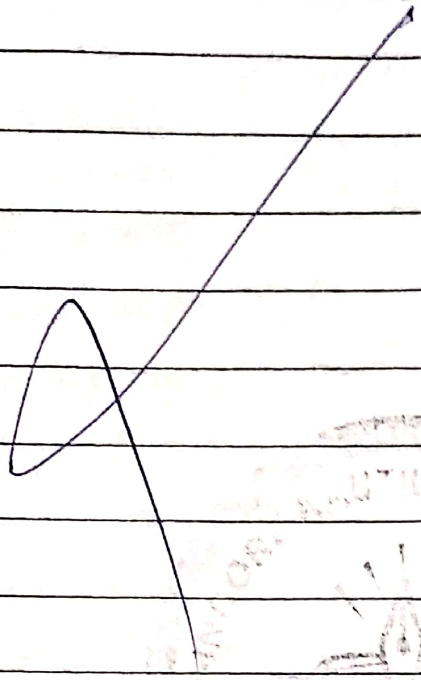

D

पारिस्थितिकी तंत्र मानव व प्रकृति के मध्य एक अहम संतुलनकारी तंत्र है जो मानव की तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परन्तु मानव की आकांक्षाओं व अंधाधुन्ध दोहन से इस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जो निम्नलिखित है:

1) जैवविविधता का व्यापक ह्रास
2) जल संकट एवं प्रदूषण
3) वायु प्रदूषण
4) खाद्य श्रृंखला पर विपरीत प्रभाव
5) जलवायु परिवर्तन समस्या
6) प्रवाल विरंजन एवं समुद्री प्रदूषण

निष्कर्ष: पारिस्थितिकी संरक्षण व संवर्धन अति आवश्यक है।

इन्दौर कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

आपदाग्रस्त जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जनजाति जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य जनजातियों की तुलना में कमजोर हो एवं जो विलुप्ति का संकट झेल रही है। भारत में पीवीटीजी समूह के अन्तर्गत लगभग 75 जनजातियों को शामिल किया गया है।
इनके अन्तर्गत मध्यप्रदेश में तीन – बैगा, सहरिया एवं भारिया आपदाग्रस्त जनजातियां हैं जो समाज की मुख्य धारा में शामिल होने से काफी दूर है।
– भारत में पूर्वी क्षेत्र की जनजातियां, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप आदि क्षेत्र की जनजातियां इसी का में शामिल है। सरकार द्वारा इनके उत्थान व संवर्धन हेतु कई प्रयास किए जा रहे है।

2

प्रश्न संख्या

G

मांग आपूर्ति श्रृंखला से तात्पर्य – उत्पादक से उपभोक्ता तक उत्पाद की समुचित व सफल पहुंच जिससे उपभोक्ता संतुष्टि की सीमा निहित हो।

इस श्रृंखला के अन्तर्गत कई उद्योग एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग भी शामिल है। इस श्रृंखला का प्रबंधन निम्न बिन्दुओं में निहित है:

1) परिवहन साधन व मार्ग सुगमता हो
2) पैकेजिंग, भण्डारण, मानकीकरण का उच्च स्तर हो।
3) आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल
4) उत्पादक उचित आय एवं कृषक संतुष्टि हो
5) व्यापक नीति व कर व्यवस्था अच्छी की हो।

H

प्रवसन से तात्पर्य – सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक आधारों से एक वर्ग का क्षेत्र से पलायन कर दूसरे क्षेत्र में निवास करना। ग्राम से नगर की ओर प्रवास का कारण निम्नलिखित है:

1) रोजगार सुनिश्चितता एवं स्थायी जीवन
2) कृषि अनिश्चितता एवं दबाव में वृद्धि
3) सांस्कृतिक - सामाजिक एकाकीपन
4) शिक्षा, स्वास्थ्य का बेहतर स्तर
5) व्यक्तिगत विकास के अनेक अवसर मौजूद
6) आय वृद्धि का प्रमुख कारक आदि अनेक कारण है जिसके कारण लोग ग्राम से शहर की ओर प्रवास करते हैं।

प्रश्न संख्या

I भारत में मानसून की शुरुआत मुख्यतः जून के प्रथम सप्ताह में मानी जाती है। जिसके अन्तर्गत नवंबर/... आईटीसीजेड पवन के दक्षिण की ओर स्थानान्तरण से दक्षिण में निम्न वायुदाब का क्षेत्र स्थापित हो जाता है। इसी प्रक्रिया में भारत में मानसून की शुरुआत इससे दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनें केरल के तट पर टकराती हैं एवं मानसून का आगमन होता है।

J बाढ़ एक प्राकृतिक एवं कुछ सीमा तक मानवीय आपदा है जब जल बहाव से नदी का जल सीमाएं तोड़कर स्थानीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है तो उसे बाढ़ कहते हैं।

भारत में बाढ़ ग्रसित क्षेत्र: उत्तर पूर्वी भारत (उत्तरप्रदेश, पश्चिमी बिहार), दक्षिण पूर्वी क्षेत्र आदि।

समस्या: जनजीवन अस्तव्यस्त, जनधनहानि, अवसंरचनात्मक हानि, कृषि हानि आदि।

समाधान के उपाय: बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बांधों का निर्माण

- आपदा से पूर्व ही समुचित प्रयास जैसे - क्षेत्र खाली करना
- जनशिक्षा, वितरण में ध्यान देना
- बाढ़ग्रसित क्षेत्रों में नागरिकों के प्रति संवेदनशीलता दिखाना।

प्रशासनिक सरकारी नीतियों व समुदाय सहयोग से बाढ़ नियंत्रण संभव है।

टिकाऊ विकास एवं भारतीय एवं सतत विकास की संकल्पना है जिसमें वर्तमान के साथ भावी पीढ़ी आवश्यकता का ध्यान रखा जाता है। इस हेतु प्रयास निम्नलिखित है:

1) भारतीय कृषि एवं जैविक कृषि को अपनाना।
2) ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों एवं अक्षय संसाधनों का अधिक उपयोग करना। (जैसे - सौर, जैव, समुद्री ऊर्जा)
3) सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास 2030 तक
4) सिक्किम में जैविक कृषि से (जैविक राज्य) का दर्जा
5) जीरो बजट प्राकृतिक खेती, कुशल सिंचाई प्रणाली

निष्कर्षतः सतत विकास हेतु सामुदायिक भागीदारी एवं सफल नीति क्रियान्वयन अति आवश्यक है।

अरावली की पहाड़ियों का विस्तार उत्तर में दिल्ली से लेकर उत्तर पश्चिम में राजस्थान तक विस्तारित है यह राजस्थान बाँगर प्रदेश को दक्षिण में मालवा व मेवाड़ के पठार से विभाजित करता है।

अरावली पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर (1322 मी.) है यह हिमालयीन वायु के अवरोधक के ओर पर अवस्थित है जिससे इस क्षेत्र में वर्षा का अभाव पाया जाता है। यहां से निकलने वाली लूणी नदी राजस्थान से होते हुए खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है। इन पहाड़ियों के पूर्व में विन्ध्याचल पहाड़ियां है।

प्रश्न संख्या 3 (B)

स्वतंत्रता से पूर्व हुई औपनिवेशिक नीतियों ने भारतीय उद्योगों का ह्रास किया था तत्पश्चात स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा औद्योगिक नीतियों के क्रियान्वयन ने उद्योगों की स्थिति को काफी सीमा तक सुधारा है परन्तु वैश्विक स्तर पर एवं घरेलू माँग के आधार पर यह औद्योगिक विकास काफी मंद एवं सीमित है।

इस मंद औद्योगिक विकास के अन्तर्गत कच्चा माल की पर्याप्त आपूर्ति के बावजूद कृषि आधारित, वनोपज, खनिज आधारित उद्योग अपनी सफलता हासिल नहीं कर पा रहे हैं। इस मंद औद्योगिक विकास के कारण निम्नलिखित है :

1) कमजोर, असीमित औद्योगिक नीति का अभाव।
2) उद्योगों हेतु उचित वातावरण एवं क्षेत्रों का अभाव।
3) उन्नत तकनीक एवं संसाधनों का अभाव
4) कुशल प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी एवं मौजूदा श्रमिकों की अनुभवहीनता।
5) परिवहन, आधारभूत संरचनात्मक कमी जिससे उत्पादों एवं कच्चे मालों का नुकसान अधिक होता है।
6) प्रसंस्करण तकनीकों एवं वैज्ञानिकता की कमी।
7) उद्योग संवर्धन इच्छाशक्ति का अभाव।
8) सरकारी नीतियों, योजनाओं के क्रियान्वयन में अभाव।
9) कर प्रणाली जटिलता, निवेश संबंधी कानून प्रणाली एवं संबंधी समस्याएं

इन तमाम कारणों से उद्योगों की स्थिति व समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संवर्धन एवं औद्योगिक विकास में वृद्धि हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं जो निम्न हैं :

1) औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना।
2) उद्योग संवर्धन नीति, 1985
3) डी आई पी पी परिवर्तन डीपीआईआईटी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।
4) निवेश प्रोत्साहन हेतु कर संबंधी जटिलता को कम किया गया है।
5) मुद्रा योजना – जिसके तहत छोटे, लघु, मध्यम श्रेणी उद्योग को ऋण प्रदान किया जाएगा।
6) स्टार्टअप योजना – नवीन उद्योगों के संरक्षण व शुरुआत हेतु ऋण प्रदान किया जाएगा।
स्टैण्ड अप योजना – महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन के साथ अनुसूचित जाति, जनजाति को भी लक्ष्य में
7) प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना – खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन एवं संवर्धन हेतु।
8) सूक्ष्म, लघु, कुटीर उद्योगों की श्रेणियों में परिवर्तन किया गया।
9) इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं –

इन तमाम कारणों से उद्योगों की स्थिति व समस्याओं को समझा जा सकता है परन्तु उद्योग संवर्धन एवं औद्योगिक विकास में वृद्धि हेतु सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए है जो निम्न है :

1) औद्योगिक नीतियों में संशोधन करना।

2) उद्योग संवर्धन नीति, 1985

3) डीआईपीपी परिवर्तित डीपीआईआईटी नाम से क्षेत्र विस्तार करना।

4) निवेश प्रोत्साहन हेतु कर संबंधी जटिलता को कम किया गया है।

5) मुद्रा योजना - जिसके तहत छोटे, लघु, मध्यम श्रेणी उद्योगों को ऋण प्रदान किया जाएगा।

6) स्टार्टअप योजना - नवीन उद्योगों के संरक्षण व शुरुआत हेतु ऋण प्रदान किया जाएगा।

स्टैण्डअप योजना - महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन के साथ अनुसूचित जाति, जनजाति को भी सहयोग

7) प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना - खाद्यप्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन एवं संवर्धन हेतु।

8) सूक्ष्म, लघु, कुटीर उद्योगों की श्रेणियों में परिवर्तन किया गया।

9) इन तमाम उपायों के अलावा भी कई प्रयास किए जा सकते हैं -

1) महिलाओं में उद्यमिता प्रसार हेतु ग्रामीण क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाना।

2) उन्नत तकनीक एवं औद्योगिक वातावरण प्रदान किया जाना।

3) भ्रष्टाचार एवं कमारलोरी की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना।

निष्कर्षतः उद्योगों के संवर्धन व विकास हेतु एक नई औद्योगिक नीति की अपेक्षा है।

8

प्रश्न संख्या 3 8

गैर परंपरागत ऊर्जा स्त्रोत या नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत से तात्पर्य ऐसे संसाधन जो एक बार उपयोग होने के पश्चात पुनः संधारण कर उपयोग में लाए जा सकते है। ऐसे ऊर्जा कि स्त्रोत जो असीमित मात्रा में प्रकृति में मौजूद है। इन ऊर्जा स्त्रोतों में - सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि है।

सौर ऊर्जा के अन्तर्गत सूर्य एक असीमित ऊर्जा स्त्रोत है जिससे असीमित मात्रा में दिन के समय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। पुराने समय में सोलर कुकर जैसे यंत्र उपयोग में लाए जाते थे जो एक शुरुआती कदम था परन्तु वर्तमान में सौर सेल, सौर बैटरी, सौर संयंत्र आदि उपकरण सामने है जो उन्नत तकनीक से युक्त होने के साथ ही सतत विकास से भी जुड़े हुए है।

सौर सेल - के माध्यम से सूर्य प्रकाश ऊर्जा को प्राप्त कर बिजली उत्पादन संभव है यह विद्युत की व्यापक बचत एवं कोयले पर निर्भरता का बेहतर विकल्प है। इसी दिशा में -

ज्वारीय ऊर्जा - सागरीय जल के प्रवाह व बल से निर्मित ऊर्जा है जिसके अन्तर्गत संयंत्रों में लगी टर्बाइन पर सागरीय तरंगों के प्रभाव से ऊर्जा पैदा की जाती है। इसी प्रकार पवन चक्कियों के माध्यम से पवन ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल

तेज़ पवन के बहाव वाले क्षेत्रों में किया जा सकता है।

इन तमाम नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत की वर्तमान आवश्यकता को निम्न बिंदुओं के तहत समझ कर सकते हैं:

1) परंपरागत ऊर्जा स्त्रोत की सीमितता एवं लगातार उनके स्त्रोतों में कमी की समस्या।
2) सतत विकास लक्ष्यों के अनुपालन में सहयोगी।
3) प्रदूषण नियंत्रण में सहायक।
4) परंपरागत स्त्रोतों को लेकर विवाद एवं तनाव से बचने एवं विकास आधारित दृष्टिकोण के अनुपालन हेतु।
5)

निष्कर्षतः नवीकरणीय स्रोत को व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय से लेकर ग्रामीण स्तर तक लागू किया जाना चाहिए ताकि सीमित स्रोतों पर दबाव कम हो सके।

3

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या 6

भूकंप एक प्राकृतिक आपदा/घटना है जो पृथ्वी के अन्तर्गत बलों के कारण प्लेटों के विसरण एवं टकराव के परिणामस्वरूप उत्पन्न बल का कारण है। भारत में भूकंप संवेदनशील क्षेत्र मुख्यतः उत्तर पूर्वी हिमालय, पश्चिमी भारत, पूर्वी भारत आदि है।

परन्तु वर्तमान में भूकंप की अनिश्चितता तमाम क्षेत्रों में मौजूद है। इस अनिश्चितता एवं उत्पत्ति के कारण निम्नलिखित है:

1) मानवीय कारण:
- संवेदनशील क्षेत्रों में बाँध, अवसंरचनात्मक गतिविधि का आपनाना।
- इन क्षेत्रों में व्यापक मात्रा में तेल व गैस अन्वेषण का कार्य करना।

2) प्राकृतिक कारण:
- प्लेटों के विवर्तनिकी संचलन का कारण
- ऊर्जा/बजट का तनाव
- ऊर्जा का मुक्त होना
- हिमालय की निकटता
- फॉल्ट एवं कगार क्षेत्र

वर्ष 2001 में गुजरात के कच्छ में आये भूकंप से लगभग 4 से 5000 लोगों की मृत्यु हो गई थी। वस्तुतः इसका मुख्य कारण

प्राकृतिक ही था। इस व्यापक भूकंप से पूर्व भारत में आपदा नियंत्रण हेतु किसी राष्ट्रीय नीति का अभाव था। इस प्राकृतिक आपदा के पश्चात ही 2005 में आपदा नियंत्रण नीति का गठन किया गया जिसके तहत राज्य एवं जिला आपदा नीति एवं आयोगों का गठन किया गया।